भगवत् कृपा

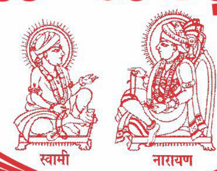

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 44 अंक : 2	11.3.2021 गुरुवार (मार्च- अप्रैल)	वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

प्रेम जिनका जगत को भुला दे,
दिये हमको ऐसे गुरु काकाजी ने...

13 मार्च 2021, शनिवार –

दिल्ली मंदिर से जुड़े संतों, युवकों, बहनों एवं गृहस्थों को बख्शिश में मिले **गुरुहरि काकाजी के मानसपुत्र प.पू. गुरुजी का 84वाँ प्राकट्य दिन!** पिछले साल- 2020 में कोरोना की प्रंचडता के कारण, प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन 13 मार्च को प.पू. दासस्वामीजी और प.पू. दिनकर अंकल की निश्रा में सिर्फ स्थानिक मुक्तों ने मनाया था।

तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी की आयु और स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए 19 मार्च की सायं **डॉ. दिव्यांग की सलाह पर** सभी मुक्तों ने प.पू. गुरुजी से प्रार्थना की कि 'चिदाकाश' हॉल में हरिभक्तों, यहाँ तक कि मंदिर में रहते संतों-युवकों के आने-जाने पर अब रोक लगा दी जाये। उनके पास केवल चार-पाँच सेवक सेवा में रहें। यह बात जब प.पू. गुरुजी से की, तब वे पत्रिका का प्रूफ चॅक कर रहे थे।

* खूब आश्चर्य हुआ कि बिना कुछ भी पूछे-करे **प.पू. गुरुजी** ने सहजता से तुरंत 'हाँ' कर दी – *'जैसा सब कहें।'* हम सब ने स्वयं सुना है कि वे अकसर कहते हैं–

मैं अकेला रह ही नहीं सकता। मुझे आस-पास बस्ती चाहिये।

इसीलिए तो उनके लिये अलग कमरा होने के बावजूद भी, वे संतों, सेवकों और हरिभक्तों के बीच हॉल में सोते हैं। कोई न कोई हरिभक्त सप्ताह में एक रात मंदिर में रुकने-करने आते हैं। यहां तक कि प.पू. गुरुजी फोन से कन्फर्म भी करते हैं– *आज तुम रुकने आ रहे हो न!*

सो, **इतनी सहजता से 'हाँ' करने पर सभी को एहसास हुआ कि वे संगी होते हुए भी असंगी** हैं।

* साथी-संगी-मुक्तों से उन्हें अतिशय प्रीति बेशक़ है, लेकिन उनकी तार तो सिर्फ गुरुहरि काकाजी से ही जुड़ी है। इसलिए गुरुहरि काकाजी की भांति किसी भी संजोग के अनुरूप वे स्वयं तो ढल ही जाते हैं, बल्कि अपने आश्रितों को भी विचलित न होने देकर स्थिरता प्रदान करते हैं।

गुरुहरि काकाजी भी तो कहते थे – *वॅन इन रोम, लिव लाइक रोमन्स...*

सो,

* यह कहा जाये कि प.पू. गुरुजी माहौल के अनुसार चलते हैं। B.Sc.– सायन्स के विद्यार्थी होने के बावजूद भी गुरुहरि योगीजी महाराज की आज्ञा से संस्कृत का अध्ययन करके वे 'शास्त्री' बने। **गुरुहरि योगीजी महाराज** की मंशा भी थी कि **'अध्यात्म मार्ग'** को रूढ़ियों की बेड़ियों से मुक्त करा कर, **'पढ़े-लिखे युवा'** मुमुक्षुओं को प्रभु प्राप्ति की सही दिशा दें।

कोरोना काल दौरान स्वयं भी लॉकडाउन रह कर, प.पू. गुरुजी ने गुरुहरि काकाजी के वचन का पालन किया–

हमारी प्रगट की जो निष्ठा है, उसके बलबूते पर कदम उठायें...

प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं –

भेड़चाल या अंधविश्वास से हमें 'सत्संग' नहीं करना है, बल्कि चैतन्य के विकास के लिये अनिवार्य है– यह समझ कर करना चाहिये।

एक व्यक्ति ने **किसी संत से उपदेश सुना–**

'ब्रह्म' सर्वत्र है। पशु-पक्षी, नर-नारी, अबाल-वृद्ध, जड़-चेतन सभी में 'ब्रह्म' है।

बस, इसी बात को पकड़ कर उसने सभी में 'ब्रह्म' को देखने की ठान ली।

एक दिन वह कहीं जा रहा था कि सामने से एक पागल हाथी दौड़ा आ रहा था और उस पर बैठा महावत ज़ोर से चिल्ला रहा था – *दूर हट जाओ, यह हाथी पागल हो गया है।*

राह में चलने वाले सभी इधर-उधर हो गये। लेकिन, वह व्यक्ति वहाँ से हटा नहीं। महावत के खूब कहने के बावजूद भी वह टस से मस नहीं हुआ और कहता रहा – *हाथी में **'ब्रह्म'** है। वह मेरा कुछ नहीं बिगाड़ेगा।*

आख़िर पागल हाथी ने तो उसे अपनी सूंड में उठा कर ज़ोर से पटक दिया।

वह संत के पास गया और उलाहना देने लगा– *आप कैसी ग़लत शिक्षा देते हो?*

संत के पूछने पर उसने सारी घटना बताई।

तब संत ने कहा – *देख, तूने **हाथी में तो 'ब्रह्म' देखा,** लेकिन उस पर बैठा महावत कह रहा था कि हाथी पागल हो गया है, तो **उस महावत में 'ब्रह्म' क्यों नहीं देखा?***

इस दृष्टांत का तात्पर्य यह है कि साधु की कथावार्ता या समय-समय पर उनके द्वारा हमें समझाई गई बात को अपनी बुद्धि के लेवल से ही पकड़ते हुए या यूं कहें कि आधे-अधूरे ज्ञान से हम खुद को हानि पहुँचाते हैं।

सो, जैसे कि इस बात में कोई संशय नहीं कि –

'स्वामिनारायण मंत्र सर्वोपरि है और इसके रटन से काले नाग का ज़हर भी उतर जाता है।'

फिर भी, **देश के प्रशासकों में, डॉक्टर्स वगैरह में 'ब्रह्म' को देख कर, प.पू. गुरुजी स्वयं उनकी गाईडलाईन्स को फॉलो कर रहे हैं और सत्संगियों से भी यही आग्रह रखा है।** जबकि भक्तों से दूर रहना तो उनकी प्रकृति के बिलकुल विरुद्ध है, क्योंकि मुक्तों को ही उन्होंने अपनी दुनिया माना है और... उनकी **'कृपा दृष्टि'** में ही तो भक्तों का भी सुकून समाया है। इसलिए चिदाकाश हॉल की चार दीवारी में रहते हुए, टॅक्नोलॉजी का उपयोग करते हुए, फोन और वीडियो कॉल से भक्तों को आनंद कराते हैं, लाड़ लड़ाते हैं।

फोन या वीडियो कॉल करना कहने में खूब आसान लगता है, लेकिन लगातार बोलने से, मोबाईन के स्क्रीन पर लगातार देखने से प.पू. गुरुजी को स्ट्रेइन तो पड़ता ही होगा। पर, **सहनशीलता के क्षितिज प.पू. गुरुजी कभी किसी को एहसास ही नहीं होने देते कि उन्हें कोई तक़लीफ़ है।**

हार्ट सर्जरी के बाद आज 24 साल से सेवक का हाथ पकड़ कर चलने के बावजूद, एक भी दिन प.पू. गुरुजी के मुख से ऐसा नहीं सुना– *पहले मैं कैसा था, और अब...*

हमारे साथ तो कोई सामान्य जैसी घटना घटी हो, तो हम प्रभु को कितने उलाहने देते हैं, फरियाद करते हैं –

मैंने तो आपकी कितनी सेवा-भक्ति की, पर मुझे क्या फल मिला वगैरह-वगैरह...

गुरुहरि काकाजी अकसर कहते – *दुनिया न माने, मानव न माने, लेकिन तुम तो मानो।*

तो, **गुरुहरि काकाजी का ही पल-पल विश्वास करके, उन्हें कर्ता-हर्ता मान कर प.पू. गुरुजी जीते हैं।**

उनसे यह शिक्षा लेते हुए, हमें जो अनुभूतियाँ हुईं उसकी अहमियत भजन की निम्न पंक्ति से समझें–

...पकड़ कर अनुभव आगे बढ़ते ही जाइए, प्रगट प्रभु की प्राप्ति का आनंद मनाइये...

भक्तों को अपनी मूर्ति का सुख देने के लिए प.पू. गुरुजी ने कभी भी अपनी आयु-देह की परवाह नहीं की है। कोरोना काल से पहले प.पू. गुरुजी हमेशा अपने सोफे पर बैठे दर्शन देते थे। दिन हो या रात, भक्तों के लिए समय की कोई पाबंदी ही नहीं रखी। विचार करें उन्हें हमसे कितना लगाव है!

संपर्क में आने वालों को हम भी गरूर से कहते –

हमारे गुरुजी से मिलने के लिए कोई एपॉइन्टमेन्ट नहीं लेनी पड़ती। ही इज़ ऑलवेज़ एवेलेबल...

और... ऐसी गफ़लत में सोचने लगे – ***चलो, हम जब भी जायेंगे गुरुजी तो सोफे पर बैठे हुए मिलेंगे ही।***

शनिवार की सत्संग सभा या **7 तारीख की भजन संध्या** के लिए भी प.पू. गुरुजी तो 7:30 बजे से सबकी राह देखते हुए बैठ ही जाते हैं।

प.पू. गुरुजी से भक्तों को दूरी न लगे और उनका दर्शन हो सके, इस हेतु मंदिर में अब बाहर **'जेतलपुर'** कॅबिन में सुबह नौ बजे से करीब साढ़े ग्यारह बजे तक प.पू. गुरुजी रोज़ बैठते हैं। सीमित समय के लिए प.पू. गुरुजी यहाँ बैठते हैं, तो सबको ऐसा होता है न कि जल्दी दौड़ कर समय से पहुँच जायें, वर्ना प.पू. गुरुजी के दर्शन नहीं होंगे। लगता है कि कोरोना महामारी हमें अपने प्रत्यक्ष स्वरूप के दर्शन, सेवा, समागम की यथार्थ महिमा समझाना चाहती है।

दरअसल, हमारी कक्षा पर आकर प.पू. गुरुजी हमारे ऐसे हमजोली बन कर रहे हैं कि उनका सही स्वरूप न पहचान कर, **हमने उन्हें परिवार का एक मुखिया-बड़ा जितना ही माना**

या

यूँ कहें कि खूब सस्ते बन कर, खुद बुरे दिखाई देकर भी उन्होंने जो अतिशय लाड़-प्यार दिया-आनंद कराया– प्रसाद दिया, उसे हमने खूब लाईटली-टेक इट इज़ी लिया।

प.पू. गुरुजी का अथाह प्रेम हम जो समझ नहीं पाये, उसकी गहराई का एहसास प.पू. पप्पाजी के स्थूल रूप से अंतर्धान होने के बाद, पू. राकेशभाई द्वारा बनाये भजन की निम्न पंक्ति कराती है –

लाड़ तुमने जो लड़ाये, मोल समझे नहीं हम। मायूस हो ग्लानि से, अब आँखें होती नम...

थोड़े दिन पहले ही प.पू. गुरुजी ने कथावार्ता दौरान **अनादि महामुक्त भगतजी महाराज** के जीवन चरित्र में से **'प्रसाद'** की महिमा निम्न प्रसंग से समझाई थी–

एक बार होली के उत्सव पर गुणातीतानंदस्वामीजी सबको 'धाणी' का प्रसाद दे रहे थे। भगतजी महाराज सेवा में व्यस्त थे, सो सबसे आख़िर में प्रसाद लेने पहुँचे। प्रसाद में धाणी के कठोर दाने ही बचे थे, जो स्वामी ने उन्हें दिये। साथ में बैठा भक्तगण सोचने लगे कि छोटी जाति का यह है, इसलिए इसी से ख़ुश हो गया। दरअसल, भगतजी तो जानते थे कि अक्षरधाम की विभूति जो भी प्रसादी देती है, उसमें अपरंपार ऐश्वर्य, रिद्धि, सिद्धि, ताक़त, शौर्य, शक्ति होती है। सो, धाणी के पाँच-सात दानें मुँह में रखते हुए भगतजी ने स्वामी से पूछा– स्वामी, यह खाने से मेरे काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, स्नेह, मान, अंहकार आदि टल गये न?

स्वामी ने प्रसन्नता से कहा – हाँ, चले गये।

हम अपने ही भीतर झांके कि ऐसी महिमा से हमने कितनी बार प्रसाद खाया?

प.पू. गुरुजी ने कई-कितनी बार प्रसाद दिया है... अरे! अपने सामने कुर्सी-टेबल पर बिठा कर अपने हाथ से परोसा भी है।

तब प.पू. गुरुजी का वह प्रेम पाकर, हम उस समय गिलगिले तो हो गये, लेकिन विश्वास से क्या प्रार्थना करी कि अखंड प्रभुधारक विभूति जब मुझ पर खूब ढली है, तो मैं सभी विकारों से परे हो जाऊँगा।

इससे भी अधिक...

उनके समक्ष बैठ कर, उनके शरीर से निकलती दिव्य किरणों से अपना रूपातंर करवाने की बजाय,

हम अपने विचारों में ही घिरे रहते हैं या संगी-साथियों के साथ ग्राम्यवार्ता में व्यस्त रहते हैं।

और... प.पू. गुरुजी की दिव्य स्मृतियों की जुगाली भी नहीं करते, इसलिए जब अपना मन हावी होता है, तब उनसे फरियाद करने भी चूकते नहीं।

पिछले साल खूब कृपा करके 31 अक्तुबर– शरद्पूर्णिमा के मंगल आरंभ पर, अर्धरात्रि को – करीब 2:40 बजे प.पू. गुरुजी ने मंदिर के स्टाफ के साथ ऑनलाइन सभा की और **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी** के

जीवनचरित्र भाग-2 पृष्ठ 189 का प्रसंग 'हम इस ब्रह्मांड के बाहर के हैं...' पढ़वा कर भगवान, संत और उनके संबंध वालों की महिमा समझाते हुए मार्मिक सूचन किया–

...संबंध वाले सारे मुक्त भले स्वभावयुक्त नज़र आते होंगे, लेकिन वे अक्षरधाम के हैं...

काकाजी कहते थे कि हमें सुहृदभाव का कलश चढ़ाना है। यह हमें हमेशा बरक़रार रखना है। *हम जो यहाँ रहते हैं, उन्हें आपस में भले एक-दूजे के स्वभाव पसंद आयें या न आयें, लेकिन यही रखना है कि* ***'हम एक हैं'*** *और* ***सारे समाज के अंदर भी चाहे हमारी मान्यता, बीलीफ या समझ के साथ उनका मेल बैठता हो या नहीं बैठता हो, लेकिन यही मानना है कि गुणातीत समाज का जो है, वो हमारा है*** *– ऐसी एकता और सुहृदभाव, एक-दूसरे के लिए मैत्री, एक-दूजे के लिए कुरबान हो जाने की भावना बरक़रार रहनी चाहिये... हमारे लड़के या परिवार वाले के लिए कोई कुछ कहे, तो क्या हम बोलेंगे कि हमें उससे क्या लेन-देन?*

...हमें तो काकाजी का संबंध हुआ है, *वे इस लोक के नहीं थे। हमें मानवरूप में नज़र आते थे, लेकिन* ***वे अक्षरधाम की विभूति थे।*** *हमें उनका संबंध हुआ है,* ***तो इनका सारा समाज अक्षरधाम का समाज है।*** *यह मानेंगे, तो भीतर में हमेशा आनंद-आनंद रहेगा। आनंद नहीं रहता, तो समझना कि यह मानने में कसर है।*

विचार करें, प.पू. गुरुजी को हमें देने की कितनी गरज़ है... **काँच के कॅबिन में बैठ कर प.पू. गुरुजी अपने जॅस्चर्स से मुक्तों को अध्यात्म की पराकाष्ठा का जो दर्शन कराते हैं, वह कल्पना से परे की बात है।** प.पू. गुरुजी हरिभक्तों को तो हाथ जोड़ कर 'जय स्वामिनारायण' करते ही हैं, लेकिन सड़क से गुज़रने वाले राहगीरों को भी हाथ जोड़ते हैं। लगातार यह देखते हुए सेवकों ने प.पू. गुरुजी से कहा–

आप अनजानों को हाथ जोड़ कर 'जय स्वामिनारायण' करते हैं, पर कोई रिप्लाई नहीं करता, तो हमें अच्छा नहीं लगता।

तब प.पू. गुरुजी ने खूब रहस्य की बात की–

जब हम ठाकुरजी का दर्शन करने जाते हैं, तो ऐसा थोड़ा होता है कि वे कुछ जवाब देते हैं।

सेवकों ने कहा– *यहाँ तो उल्टा हो रहा है, भगवान हाथ जोड़ते हैं।*

प.पू. गुरुजी ने कहा– ***हमें तो इन सबको भी भगवान का स्वरूप मानना है।***

यहाँ प.पू. गुरुजी ने मानो गुणातीत ज्ञान का निचोड़ बता दिया। असल में प.पू. गुरुजी हमें यह समझाना चाहते हैं कि 'हमारे मंदिर' के सामने से जाने-अनजाने भी कोई गुज़रता है, उसे किसी न किसी जन्म में यह संबंध अवश्य होने ही वाला है। सभी गुणातीत स्वरूपों की भी यही चाहना दिखाई देती है कि हम अब सभी को संबंध की दृष्टि से ही निहारें...

सच, हम प.पू. गुरुजी की मरज़ी के मुताबिक़ तो वर्तते नहीं, लेकिन गुरुहरि काकाजी का संबंध देख कर, वे जब हमारे स्वभाव जँचा रहे हैं, तो हम संबंध की दृष्टि से सबको क्यों नहीं निहार पाते?

तो, समय गवाँये नहीं और प.पू. गुरुजी की मरज़ी में रह कर जन्मों की हमारी जड़ता पर सेरे लगवा कर शाश्वत् सुख पायें – ऐसी प्रार्थना!

त्रिपर्वों पर ...

28 मार्च 2021 – होलिका दहन...
अनादि महामुक्त भगतजी महाराज का प्रागट्य दिन!

बुराई पर अच्छाई की जीत का त्यौहार तो **'होली'** है ही, लेकिन ईष्टदेव के प्रति अटूट विश्वास का प्रतीक भी है। भक्त प्रहलाद् को भगवान विष्णु पर अतिशय भरोसा था कि मेरे प्रभु मेरी रक्षा में निरंतर हैं, तभी तो वे होलिका की गोद में निर्भयता से बैठ गये! और... सभी जानते हैं कि होलिका जल गई, पर भक्त प्रहलाद् को आँच भी न आई।

इसी मंगलकारी दिन प.पू. भगतजी महाराज ने दर्जी कुटुंब में जन्म लिया। छोटी आयु में ही गाँव के लक्ष्मीनारायण मंदिर वे जाते, रामायण के श्लोक कंठस्थ करके धार्मिक संस्कार प्राप्त किये। अपने ज्येष्ठ भ्राता की आज्ञा से महुवा के स्वामिनारायण मंदिर में पधारे **सद्गुरु योगानंदस्वामी** का जोग करके भगवान स्वामिनारायण के आश्रित बने। तत्पश्चात् **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी** को अपनी जीवनडोर सौंप कर, उनकी मरज़ी में रह कर, मुमुक्षुओं के लिए अकल्पनीय आदर्श बने। स्वामी का सेवन करके शुद्ध उपासना का गूढ़ रहस्य जाना और समझा कि यदि भीतर की होली को बुझाना है, तो प्रगट सत्पुरुष का जोग अनिवार्य है। और... वचनामृत मध्य 28 को अपना ध्येय बना कर, सभी को ब्रह्म की मूर्ति मान कर सेवा करना ठान लिया। इस वचन का उन्होंने ऐसा दृढ़ पालन किया कि डंके की चोट पर वे कहते –

श्रीजी महाराज भी मुझे विमुख नहीं कर सकते। मैं किसी का अभाव लूँ-अवगुण देखूँ तो विमुख करेंगे न!

काकाजी-पप्पाजी जब **'विमुख'** ज़ाहिर किये गये थे, तब इन दोनों ने यही कहा था–

'विमुख किया नहीं जाता, विमुख होना पड़ता है!'

भगतजी महाराज की ऐसी अलमस्ताई उनकी ब्राह्मीस्थिति का दर्शन कराती थी। उन्होंने किसी का अभाव तो लिया नहीं, बल्कि सभी को स्वामी का स्वरूप मान कर हर एक को नमन किया। फलस्वरूप स्वामी उन्हें वश हो गये। स्वामी को राज़ी करने के लिए सेवा में रत रहते हुए भी उनकी वृत्ति स्वामीश्री से ही अखंड चिपकी रहती। इसलिए कोई सेवा करते हुए वे कभी भी थके या ऊबे नहीं। सर्वत्र स्वामीश्री की दिव्यता का ही अनुभव किया।

सो, इनके प्राकट्य पर्व पर यही याचना करें कि सेवा में भले हम प्रवृत्त रहें, लेकिन आपकी भाँति एक क्षण के लिए भी **'प्रगट प्रभु'** की मूर्ति को भूलें नहीं।

मंदिर की सेवाएँ मुक्तों को एक-दूजे को नज़दीक लाने का स्रोत जरूर हैं, लेकिन प्रगट संत की रसघन मूर्ति तो नायगरा फॉल सम शाश्वत् सुख का प्रपात है।

29 मार्च 2021 – धुलेन्डी...

अनुपम आधार संतभगवंत साहेबजी का प्राकट्य पर्व!

धुलेन्डी जिसे धूलिवंदन भी कहते हैं। धूलिवंदन का अर्थ यानि धूल की वंदना। होलिका दहन के दूसरे दिन उसकी राख को माथे पर लगा कर रंगोत्सव शुरू करते हैं।

अनंत चैतन्यों के मन की होली को मिटाने के लिए **संतभगवंत साहेबजी** आज के शुभ दिन प्रगटे।

गुरुवर्य **योगीजी महाराज** से असाधारण वात्सल्य पाए हुए,

गुरुहरि **काकाजी-पप्पाजी, प.पू. स्वामीजी से प्रगट स्वरूप का अपरंपार माहात्म्य** जाने हुए

और

चैतन्यजननी सोनाबा से निरपेक्ष प्रेम पाए हुए

संतभगवंत साहेबजी अपने संपर्क में आते सभी को प्रभुभक्ति से भर देते हैं। मुमुक्षुओं को उनके निरपेक्ष प्रेम की झांखी कराते हुए, उनके 49वें प्राकट्य दिन पर **गुरुहरि पप्पाजी** ने निम्न आशीर्वाद दिया था–

आज साहेब का प्राकट्य दिन! भीतर में हम टटोलें कि साहेब की प्रसन्नता प्राप्त करने हेतु संप, सुहृदभाव, एकता एवं निर्दोषबुद्धि रखने में क्या बाधारूप होता है? कौन-सा स्वभाव आड़े आता है? उन्हें टालने के लिए प्रार्थना करने का आज दिन है।

साहेब तो अखंड कृपावर्षा कर ही रहे हैं। वे भक्तों का भजन करते हैं। 99 प्रतिशत काम तो वे ही करते हैं। माला फेरते हैं - स्मृति करते हैं। हमें अपना कितना सान्निध्य देते हैं...! अपनी मूर्ति की लगातार स्मृति देने के लिए साथ-साथ रखते हैं।

*उनकी जो भी मूर्ति याद आये, उसकी स्मृति किया करें, परंतु उदास न हों। जब भी उदासी हमें घेरे तो उनकी कोई भी मूर्ति पकड़ लो। क्योंकि अखंड **ब्रह्मानंद** में रहना ही **हमारा स्वधर्म** है।*

***एकांतिक का स्वधर्म क्या? ब्रह्म की मस्ती में रहना।** साहेब की प्राप्ति हुई है न? तो, यही सोचना कि मैं उदासी या विक्षोभ में रह ही नहीं सकता, टिक नहीं सकता। फिर, माहात्म्ययुक्त सेवा में जुटे रहेंगे, तो इस लोक से परे के अक्षरधाम के सुख के भोक्ता बन जायेंगे। वचनामृत गढडा अंत्य 11 के मुताबिक चलते-फिरते, खाते-पीते सभी प्रवृत्तियाँ करते हुए भी हमारा सुख, शांति, आनंद तनिक भी कम न हो – ऐसी प्रार्थना आज करनी है।*

साहेब जैसा सुख सभी प्राप्त करते हो जायें, ऐसे आज साहेब के प्रागट्य दिन पर आशीर्वाद।

यूं, गुरुहरि पप्पाजी ने समझाया कि ऐसी दिव्य विभूतियों का प्राकट्य पर्व अंतर्दृष्टि करके, अंतर से पुकार करने का एक मौका है। सो, संतभगवंत साहेबजी की प्राकट्य तिथि पर प्रार्थना करें कि ब्रह्मानंद करते हुए, अब हम आपका गौरव बनें...

21 अप्रैल 2021 – रामनौमी...

भगवान स्वामिनारायण का अवतरण दिन!

अयोध्या में चैत्र **शुक्ला नौमी** के दिन भगवान श्री रामचंद्रजी प्रगट हुए थे, सो वह दिन 'रामनौमी' के नाम से जाना जाता है। इसी मंगलकारी दिन सन् 1781 में धर्मदेव-भक्ति माता के घर भगवान स्वामिनारायण का प्रादुर्भाव हुआ।

स्वामिनारायण संप्रदाय में इसे '**श्रीहरि नौमी**' के रूप में मनाते हुए संतगण व्रत रखते हैं।

भगवान स्वामिनारायण की जीवनयात्रा सर्वविदित है। माता-पिता के अवसान के बाद ग्यारह वर्ष की आयु में उन्होंने गृहत्याग किया। नीलकंठ वर्णी के रूप में संपूर्ण भारत में भ्रमण करते हुए, उन्होंने **गुजरात** को अपनी कर्मभूमि बनाया।

स्वयं अवतारों के अवतारी पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण होने के बावजूद, गुरु की महिमा को उजागर करने, गुरु रामानंदस्वामी से दीक्षा लेकर वे '**सहजानंदस्वामी**' बने। गुरु रामानंदस्वामी तो कहते थे –

मैं तो डुगडुगी बजा रहा था; आत्यांतिक कल्याण योजना को साकार रूप देने वाले तो यह सहजानंदस्वामी हैं।

जनसाधारण को अंधविश्वास और धर्म की आड़ में फैलाई गल्तफहमियों से मुक्त कराने, शुरुआत में उन्होंने चमत्कारों एवं समाधि की परंपरा सर्जी। फलस्वरूप कइओं ने उन्हें जादूगर कहा। परंतु, उनका उद्देश्य तो अपने नाम के अनुरूप, जीवों को सहजानंद बख़्शिश में देना था।

इसलिये तत्कालीन परिस्थिति-माहौल में स्वयं को ढाल कर, उन्होंने निरक्षरों को शास्त्रों के गूढ़तम रहस्य सरलता से समझाये। इतना ही नहीं, जीवन किस प्रकार जीना चाहिए, रोज़मर्रा की जिंदगी के उतार-चढ़ाव में किस प्रकार गतिस्थिरता रखनी चाहिये, व्यावहारिक संबंधों में किस प्रकार मिठास लानी चाहिए, ऐसे सभी मुद्दों पर एक साधारण शिक्षक की अदा से प्रकाश डाला।

दरअसल, उनका प्राकट्य तो जाति, वर्ण, रंग के भेदों से ऊपर उठ कर, पर सत्य स्वरूप में लीन होकर जीवों को एक-दूजे के पूरक बनाने के लिए था।

सो, मनुष्य को जन्मों से चिपके हठ, मान, ईर्ष्या, आशा, तृष्णा, महत्वाकांक्षा जैसे आसुरी वृत्तिओं का रूपांतर करने का बीड़ा उन्होंने उठाया।

भगवान स्वामिनारायण का धरती पर आगमन का हेतु

और

कलियुग से त्रासित मुमुक्षुओं को सुखी करने की रीति का ख्याल–

'बोले श्रीहरि रे, सुनो नर-नारी हरिजन...' में उन्होंने स्वयं दिया है।

प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी की आज्ञा से पिछले एक वर्ष से '**गुणातीत समाज**' के सभी केन्द्रों में यह स्मृतिगान होता है।

भगवान स्वामिनारायण की जयंती के मंगल अवसर पर इस पद की प्रत्येक पंक्ति का रहस्य **संतभगवंत साहेबजी** के आशीर्वचन से समझें...

बोले श्रीहरि रे, सुनो नर-नारी हरिजन...

हम सभी भगवान श्री स्वामिनारायण के आश्रित हैं।

प्रभु का आसरा करने के बाद हमारी संपूर्ण जिम्मेदारी प्रभु ले लेते हैं।

साधु से हमें लगाव है, सो भगवान हमारे ज़मानती हैं।

हम कल्याण के मार्ग पर अग्रसर हैं, वहाँ से मुड़ जाने का कोई मार्ग ही नहीं है।

हम जब प्रभु के आश्रित हुए हैं, तो भगवान की बात पर भरोसा रखना चाहिए।

स्वामिनारायण भगवान ने स्वयं बनाया यह भजन सुनें, गायें और वर्ताव में लायें।

प्रार्थना का बल लेकर लग पड़ेंगे, तो जीतेजी उत्कृष्ट सुख, शांति व आनंद भोगते हो जायेंगे।

मुझे एक वार्ता रे, सबको कहने का है मन...

भगवान को अपने मन की बात करने का मन हुआ।

हम पर उनकी कृपा हुई है, तो शीलवान और मर्यादा रख कर जीता एक समाज तैयार हुआ।

भगवान ने कहा – मेरी मूर्ति दिव्य है।

इसका मतलब क्या ? इस मूर्ति को देखते रहते हैं, तो कितना आनंद आता है ?

ये सभी मुक्त भी ऐसे हैं। 'ब्राह्मण का बेटा ब्राह्मण' होता है – यूँ 'ब्रह्म का बेटा ब्रह्म' नहीं ?

लेकिन, सभी को ब्रह्म की मूर्ति मानने में हमारा देहभाव आड़े आता है।

सो, देह को तो भक्तों की सेवा में घिस देना चाहिये।

उसकी रीति महाराज बताते हैं –

'जहाँ देखो वहाँ रामजी और कुछ ना भासे रे...' ऐसी कक्षा पर वे हमें ले जाना चाहते हैं।

मेरी मूरती रे, मेरा लोक, भोग और मुक्त; सर्वे दिव्य हैं रे, वहाँ तो दर्शन की है जुक्त...

भगवान के रहने का धाम 'अक्षरधाम' है। ***साधु भगवान का 'धाम' है।*** *ऐसे साधु सामान्य नहीं हैं।*

उनकी कृपा हो जाये, तो हमारा व्यवहार व मोक्ष दोनों सुधार दें। उन्हें राज़ी करने की रीति सीखनी चाहिये।

मेरा धाम है रे 'अक्षर अमृत' जिसका नाम, सर्वे सामर्थी रे शक्ति गुण से है अभिराम...
अति तेजोमय रे रवि-शशि कोटि वारी जायें, शीतल-शांत है रे तेज की उपमा न दी जाए...

भगवान कहते हैं– मेरा धाम शीतल है, अति तेजोमय है। उसमें मैं रहता हूँ। ऐसे साधु में निवास करता हूँ।

कई बार साधु हमें शीतल नहीं दिखते, क्योंकि हम अपने जैसे ही ऐसे साधु को देखते हैं।

बापा कहते थे– दिव्य बनने के लिए हमें कोई साधना करने की ज़रूरत नहीं है।

भगवान के साधु और भगवान के भक्त को दिव्य मानेंगे, तो हमारा सब कुछ अपने आप दिव्य हो जायेगा।

वे हमें बुलायें या ना बुलायें, तो भी आनंद में रहना। ऐसे साधु अनंत प्रकाश से युक्त हैं।

उनकी 'प्रकाशदृष्टि' हम पर पड़े तो हमारा सब कुछ टल जाये।

उसमें मैं रहूँ रे द्विभुज दिव्य सदा साकार, दुर्लभ देव को रे मेरा कोई न पाए पार...

जीव-ईश्वर आदि रे माया, काल, पुरुष-प्रधान, सबको वश करूँ रे सबका प्रेरक मैं भगवान...

अगणित विश्व की रे उत्पत्ति, पालन, प्रलय हो, मेरी मरज़ी बिना रे किसी से तिनका न तोड़ा जाए...

भगवान मानवरूप - द्विभुज में ही हैं। सदा साकार हैं।

भगवान कहते हैं – मेरी मरज़ी के बिना जब किसी से तिनका भी न तोड़ा जाये, तो भला और तो क्या कर पायेगा ?

भगवान को कर्ता-हर्ता माना जाये, तो जीवन में एक अलग प्रकार की मस्ती और आनंद प्रगटेगा।

इस हेतु खूब प्रार्थना और भजन करना पड़े। ***जब तक देह है, तब तक जाग्रतता रखनी पड़े।***

यूँ मुझे मानना रे मेरे आश्रित सब नर-नारी, मैंने तो तुम्हारे पास रे वार्ता सत्य कही है मेरी...

मैं तो तुम कारण रे आया धाम से धर के देह, 'प्रेमानंद' के रे स्वामी बरसे अमृत मेह...

महाराज कहते हैं – तुम मेरे आश्रित हो, इसलिये मैंने तुम्हें यह सही-सही बताया है कि –

मैं तुम्हारे लिये अक्षरधाम से धरती पर आया हूँ।

एक बार महाराज अचानक एक भक्त के घर पहुँच गये।

वहाँ आंधी-तूफान के कारण उसके घर की छत का बीम खिसक गया था। आंधी-तूफान से वह उदास बैठा था।

महाराज ने कहा – मेरे कंधे पर पाँव रख कर तू इसे ठीक कर दे।

वह भक्त बोला – आप भगवान का स्वरूप हैं, आपके कंधे पर पैर कैसे रखा जाये ?

तब महाराज ने कहा – रोज़ मेरी जीभ पर पाँव रखता है, तो आज कंधे पर पाँव रख न!

भक्त ने कहा – आपकी जीभ पर मैंने किस दिन पाँव रखा है ?

भगवान ने कहा – मेरी आज्ञा का पालन नहीं करता, वह तूने मेरी जीभ पर पाँव रखा ही न!

भगवान कहते हैं – तुम मेरे आश्रित हुए, तो मेरे वचन के मुताबिक चलो।

यदि भटक भी जाओ तो 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण' भजन करो।

संत के पास निष्कपट होकर भजन, प्रार्थना और सेवा करके सही मार्ग पर आ जाना चाहिए।

भगवान को राज़ी कर लेने की लगन सतत रखनी चाहिये।

अब हमें किस प्रकार जीना चाहिये, वो वे बताते हैं।

और सब सुनिए रे मेरी वार्ता परम अनूप, परम सिद्धांत है रे सबको हितकारी सुखरूप...

मेरे परम सिद्धांत रूप मेरी कही बात अनुपम है – अद्वितीय है व सभी को लाभदायी एवं सुखकारी है।

स्वहित के लिये उसका अमल करना।

हमें कहाँ जाना है ? यदि कहीं जाना हो, तो पैसे देकर टिकिट लेनी पड़ती है।

इसी प्रकार, धाम में जाना हो, तो प्रभु को समर्पित हो जाना चाहिये। लाभ पाने के लिए कुछ देना पड़ता है।

सभी हरिभक्त को रे जाना हो मेरे धाम, तो मेरा सेवन रे करो शुद्धभाव से हो निष्काम...

अक्षरधाम में रहना हो, तो मनमानी करने की आस छोड़ देना।

*सभी क्रिया प्रभु को याद करके करेंगे, तो वह **'विषय'** नहीं बनेगा।*

*नींद एक **'विषय'** है क्योंकि सुषुप्ति में हम भगवान को भूल जाते हैं।*

- *भले हम मंदिर में जाग्रत भी बैठे होंगे, पर भगवान को भूल कर अन्य बातों में व्यस्त होंगे, तो वह **'विषय'** ही है। भगवान का मनन-चिंतन करके जो कुछ भी करेंगे, वह **'निष्काम कर्म'** है।*
- *भगवान को भुला दे वो **विषय**।*
- *सत्पुरुष की आज्ञा पालने न दे, वह **विषय**।*
- *भक्तों से दूरी बना दे – मनमुटाव करा दे वो **विषय**।*

*ऐसे **विषय** को छोड़ देना। प्रभु और प्रभु के भक्त की संगत से भरे-भरे रहना। **प्रभु के भक्तों को दिव्य मानना।***

इस प्रकार जीवन जियेंगे, तो पंचविषय अपने आप टल जायेंगे।

*उत्सवों में भक्तों की भीड़ में **'विषय'** घिसते जाते हैं।*

मानो पाँच जनों के सोने की व्यवस्था की गई हो और पचास जने आ गये,

तो बिस्तर कम होने पर ज़मीन पर ही सोना पड़ेगा।

पर, समूह में रहते व्यक्ति को गद्दे-तकिये का अभाव महसूस नहीं होगा।

भगवान के धाम में - मंदिर में जो हर परिस्थिति में अपने आपको ढाल ले, वह धन्य हो जाता है।

उत्सवों में जैसा-तैसा भी मिले, उसे सहर्ष स्वीकार लें, उसी से भीतर में आनंद प्रगटता है।

भगवान की मूर्ति और भक्तों की सेवा के सिवा कुछ भी पाने जैसा नहीं है–

ऐसी जिसे समझ है, वह पंचविषय में से परे हो गया – ऐसा जानना।

गुणातीतानंदस्वामीजी की बातों में लिखा है – सभी को कसनी में लेना है।

उत्सवों में इकट्ठे करके प्रभु हमें झंझोड़ देते हैं। फिर ब्रह्मरस से भर देते हैं।

सब हरिभक्त को रे रहना हो मेरे पास, तो तुम छोड़ना रे मिथ्या पंचविषय की आस...

देह के संबंधियों को छोड़ने में कोई कठिनाई नहीं आती।

घर छोड़ कर आश्रम में बैठना मुश्किल ज़रूर है, फिर भी वह संभव हो जाता है।

*परंतु, इस **देह की** जो **माया** है,*

*उसी से **भगवान और भगवान के भक्त के प्रति अभाव-अमहिमा उत्पन्न होती है।***

सो देह, कुटुंब, परिवार का ममत्व छोड़ देना चाहिये।

देह के सगे यदि भक्ति करने में सहाय करते हों, तो ठीक है;

यदि विरोध - झंझट करते हैं तो उन्हें छोड़ देना।

*ऐसे ही, **साधक के लिये इंद्रियाँ - अंतःकरण सगे-संबंधी हैं।***

वे यदि भगवान को राज़ी करने की भावना को बरक़रार रखने में साथ न देते हों,

तो व्रत-भजन करके उन्हें ठुकरा देना चाहिये।

मुझ बिन जानना रे दूजे मायिक सब आकार, प्रीति तोड़ना रे झूठा मान कुटुंब-परिवार...

तुम सब पालना रे, करके दृढ़ सभी मेरे नेम, तुम पर राज़ी होकर रे धर्म व भक्ति करेंगे क्षेम...

*भगवान कहते हैं : 'सर्वोपरि भगवान' – मेरे सिवा अन्य को **मायिक** समझना।*

अर्थात् तुम्हारे भीतर की माया को वे टाल नहीं पायेंगे।

सो, उन्हें खोटे समझ कर उनसे प्रीति नहीं रखना।

और... मेरी आज्ञा का दृढ़ता से पालन करना;

तो, मेरी प्रसन्नता के फलस्वरूप तुम्हारा 'धर्म' भी रहेगा व 'भक्ति' भी तुम्हें श्रेयकारी बनेगी।

*हम भूलें नहीं कि **अश्विनभाई, शांतिभाई, रतिभाई, सनंदभाई** जैसे व्रतधारी साधु सामान्य नहीं हैं,*

इनके द्वारा प्रभु हमारा काम करते हैं।

उनकी आज्ञा का पालन करते हुए, राज़ी करने का भाव निरतंर रखें, तो हमारी यात्रा सफल हो जायेगी।

व्रतोत्सवसूची

(1)	**दि.13.3.'21,**	**शनिवार**	**– प.पू. गुरुजी का 84वाँ प्राकट्य दिन**
(2)	**दि.14.3.'21,**	**रविवार**	**– प.पू. गुरुजी की 84वीं प्राकट्य तिथि**
(3)	दि. 25.3.'21,	गुरुवार	– एकादशी, व्रत
(4)	**दि.28.3.'21,**	**रविवार**	**– होली, अनादि महामुक्त भगतजी महाराज की जयंती**
(5)	**दि.29.3.'21,**	**सोमवार**	**– धुलेन्डी, संतभगवंत साहेबजी का प्राकट्य दिन**
(6)	दि. 7.4.'21,	बुधवार	– एकादशी, व्रत
(7)	दि. 13.4.'21,	मंगलवार	– गुड़ी पड़वा
(8)	दि. 21.4.'21,	बुधवार	– **रामनौमी, भगवान स्वामिनारायण जयंती**
(9)	दि. 23.4.'21,	शुक्रवार	– एकादशी, व्रत
(10)	दि. 27.4.'21,	मंगलवार	– श्री हनुमान जयंती
(11)	दि. 7.5.'21,	शुक्रवार	– एकादशी, व्रत
(12)	दि. 14.5.'21,	शुक्रवार	– अखात्रीज

R.N.I. 28971/77 ***(Air Mail)***
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052